बुजरकी मारे रे

बुजरकी मारे रे साथजी, बुजरकी मारे।
जिन बुजरकी लई दिल पर, तिनको कोई ना उबारे।।

जेती बुजरकी बीच दुनी के, सो सब कुफर हथियार।
कुफरों में कुफर बुजरकी, काम क्रोध अहंकार।।

इन माया में कोई बुजरकी, छूट खुदा जो लेवे।
सो तेहेकीक आपे अपना, पाया फल सो भी खोवे।।

खोवे जोस बंदगी खोवे, और साहेब की दोस्ती ।
बिना इस्क जो बुजरकी, सो सब आग जानो तेती।।

मोको मार छुड़ाई बंदगी, सो भी बुजरकी इन।
ऐसी दुस्मन ए बुजरकी, मैं देखी न एते दिन।।

म्हामत कहे ईमान इस्क की, सुक्र गरीबी सबर।
इन विध रूहें दोस्ती धनी की, प्यार कर सके त्यों कर।।